
shrItripurasundarI sAnnidhyastavaH

श्रीत्रिपुरसुन्दरी सान्निध्यस्तवः

Document Information

Text title : shrItripurasundarIsAnnidhyastavaH

File name : tripurasundarIsAnnidhyastava.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, stotra, devI, stava

Location : doc_devii

Transliterated by : Pankaj Dubey dr.pankaj.dubey at gmail.com

Proofread by : Pankaj Dubey dr.pankaj.dubey at gmail.com

Latest update : April 15, 2015

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीत्रिपुरसुन्दरी सान्निध्यस्तवः



॥ ५ ॥

कल्प-त्मानु समान-त्वास्वर-धाम-लोचन-गोचरम्
किं किमित्यति-विस्मिते मयि पश्यतीह समागताम् ।
काल-कुन्तल-भार-निर्जित-नील-मेघ-कुलां पुरः
यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ १ ॥

॥ अ ॥

अेक-दन्त-षडाननाद्विभिरावृतां जगदीश्वरीम्
अेनसां परि-पन्थिनिमलमेक-भक्ति-मदर्थिताम् ।
अेक-डीन-शतेषु जन्मसु सञ्चितात् सुकृतादिमाम्
यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ २ ॥

॥ ० ॥

०दृशीति य वेद-कुन्तल-वाग्भिरथ निरूपिताम्
०श-पञ्ज-नाभ-सृष्टि-कृदादि-वन्द्य-पदाम्बुजाम् ।
०क्षाणान्त-निरीक्षाणेन मदिष्टदां पुरतोऽधुना
यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ३ ॥

॥ ल ॥

लक्षाणोज्ज्वल-डार-शोभि-पयोधर-द्वय-कैतवात्
लीलयैव दया-रस-स्रवद्गुञ्जवल्-कलशान्विताम् ।
लाक्ष्याङ्कित-पादपाति-मिलिन्द-सन्ततिमग्रतः,
यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

५ीमिति प्रति-वासरं जप-सुस्थिरोऽहमुदारया

योगि-मार्ग-निरुद्धयैश्च-सुभावनां गतया धिया ।
 वत्स ! उर्ध्वमवाम-वत्यलमित्युदार-गिरं पुरः
 यक-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ५ ॥

॥ ७ ॥

उंस-वृन्दमलक्तकारुण-पाद-पङ्कज-नुपुर-
 क्वाण-मोहितमादरादनु-धावितं मृदु शृण्वतीम् ।
 उंस-मन्त्र-महार्थ-तत्त्व-मयीं पुरो मम भाग्यतः
 यक-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ६ ॥

॥ ८ ॥

सङ्गतं जलमभ्र-वृन्द-समुद्भवं धरणी- धराद्
 धारया वल्लभसा भ्रममाप्य सैकत-निर्गतम् ।
 अवेमादि-मलेन्द्र-जाल-सुकोविदां पुरतोऽधुना
 यक-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ॥ ७ ॥

॥ ९ ॥

कम्बु- सुन्दर-कन्धरां कथ-वृन्द-निर्जित-वारिदाम्
 कण्ठ-देश-लसत् -सुमङ्गल-उेम-सूत्र-विराजिताम् ।
 कादि-मन्त्रमुपासतां सकलेष्टदां मम सन्निधौ,
 यक-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ ८ ॥

॥ १० ॥

उस्त-पद्म-लसत्-त्रिषण्ड-समुद्रिकामलमद्रिजाम्
 उस्ति-कृत्ति-परीत-कार्मुक-वल्लरी-सम-चिह्निकाम् ।
 उर्थज-स्तुत-वैभवां भव-कामिनीं मम भाग्यतः
 यक-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ ९ ॥

॥ ११ ॥

लक्षाणोल्लसदङ्ग-कान्ति-अरी-निराकृत-विद्युतम्
 लास्य-लोल-सुवर्ण-कुण्डल-मण्डितां जगदम्बिकाम् ।
 लीलयाऽपिल-सृष्टि-पालन-कर्षणादि-वितन्वतीम्
 यक-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ १० ॥

॥ ११ ॥

द्वीमिति त्रिपुरा-मनु-स्थिर-येतसा बहुधाऽर्यिताम्
 डादि-मन्त्र-महाम्बु-जात-विराजमान-सुदुंसिकाम् ।
 उम-कुम्भ-धन-स्तनां यल-लोल-मौक्तिक-भूषणाम्
 यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ ११ ॥

॥ स ॥

सर्व-लोक-नमस्कृतां जित-शर्वरी-रमणाननाम्
 शरव-देव-मनः - प्रियां नव-यौवनोन्मद-गर्विताम् ।
 सर्व-मङ्गल-विग्रहां मम पूर्व-जन्म-तपो-भवात्
 यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ १२ ॥

॥ ३ ॥

कन्द-मूल-कृलाशिभिर्बहु-योगिभिश्च गवेषिताम्
 कुन्द-सुन्दर-दन्त-पंक्ति-विराजितामपराजिताम् ।
 कन्दमागम-वीरुधां सुर-सुन्दरीभिरिडागताम्
 यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ १३ ॥

॥ ल ॥

ल-त्रयाङ्कित-मन्त्र-राट्-समलंकृतां जगदम्बिकाम्
 लोल-नील-सुकुन्तलावलि-निर्जितालि-कदम्बिकाम् ।
 लोभ-मोह-विदारणीं करुणा-मयीमरुणां शिवाम्
 यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ १४ ॥

॥ द्वी ॥

द्वी-पराप्य-महा-मनोरधि-देवतां भुवनेश्वरीम्
 दुत्-सरोज-निवासिनीं हर-वल्लभां बहु-रूपिणीम् ।
 डार-कुण्डल-नूपुरादिभिरन्वितां पुरतोऽधुना
 यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ १५ ॥

॥ श्री ॥


श्री-सु-पञ्च-दशाक्षरीमपि षोडशाक्षर-रूपिणीम्
 श्री-सुधासर्व-मध्य-शोभि-सरोज-कानन-चन्द्रिकाम् ।

श्रीगुड-स्तुत-वैभवां पर-देवतां मम सन्निधौ


यङ्क-राज-निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमलमाश्रये ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीत्रिपुरसुन्दरी सान्निध्यस्तव सम्पूर्णा ॥

Encoded and proofread by Pankaj Dubey dr.pankaj.dubey at gmail.com

——
shrItripurasundarI sAnnidhyastavaH

pdf was typeset on February 2, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

